।। अमर लोक मेहमा ग्रंथ ।।

मारवाडी + हिन्दी

(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ अमर लोक मेहमा ग्रंथ लिखंते ||

|| श्लोक ||

पढंते सुणंते सिखंते || प्रम धाम पावंते सही ||
न्ह कर्मा निराधार || निर्भे सदा || महा सुखंग ||१||

यह अमरलोक ग्रंथ कोई भी हंस सतस्वरुप ज्ञान दृष्टीसे पढेगा या सतस्वरुप ज्ञान दृष्टीसे सुनेगा अथवा सतस्वरुप ज्ञान दृष्टी से सिखेगा तो उसे परमधाम याने अमरलोक प्राप्त होगा । वह अमरलोक ने:कर्मी है याने त्रिगुणी मायाके कर्मो से और होनकालके दु:खोसे मुक्त है । वह अमरलोक निराधार याने स्व:आधार का है । उसे किसीके आधार की आवश्यकता नही है । वह अमरलोक निर्भय याने कालके भयसे मुक्त है । वह अमरलोक महाप्रलयमे मायाके समान मिटनेवाला नही है । वह सदा जैसेके तैसे रहनेवाला है । वह अमरलोक सदा महासुखो से पुर्ण भरा है ।||१||

सतश्रूप आणंद पद || निज नांव || केवळ पद || ग्यान रूपं ||
ग्यान ध्यानं || ग्यान दिष्टं || सदा सुखम || नेह चला ||२||

अमरलोक माया के ३ लोक १४ भवन समान असत नही है याने महाप्रलय मे मिटनेवाला नही है । वह अमरलोक कल भी था,आज भी है और कल भी रहेगा तथा ऐसा कोई समय नही था की वह नही था या ऐसा कोई समय नही रहेगा की वह नही रहेगा ऐसा सदा त्रिकालादि रहनेवाला सत है । अमरलोक कोरे आनंद का पद है । वह माया के ३ लोक १४ भवन जैसे आनंद के साथ दु:खो से भरा हुवा है वैसा नेकभर भी नही है । अमरलोक मे निजनाम है । यह नाम आदि अनादी से कुद्रती प्रगट है । यह नाम त्रिलोकी मे कृत्रिम विधी से बावन अक्षरो से बनते ऐसा बना हुवा नाम नही है । यह निजनाम अखंड्ति ध्वनी स्वरुप है । यह निजनाम मुखसे न लेते आनेवाला तथा कागजपे न लिखते आनेवाला कुद्रती नाम है । अमरलोक यह केवलपद है । इसमे जीव के साथवाला मन और पाँच आत्मा यह माया नही है । उसमे त्रिगुणी माया समान रजोगुण,सतोगुण,तमोगुण माया नही है । उसमे होनकाल के समान इच्छा के साथ संसार करके सृष्टी बनाने की माया नही है । वह माया रहीत कोरा केवल है । अमरलोक विज्ञान ज्ञान स्वरुप है । अमरलोक का ध्यान विज्ञान स्वरुप है । उसकी दृष्टी माया तथा कालके परे की विज्ञान ज्ञान की है । अमरलोक निश्चल है । वह माया के समान महाप्रलयमे मिटनेवाला नही है । अमरलोक सदा विज्ञान ज्ञान का महासुख देनेवाला पद है ।||२||

अमर लोक अमर धाम || गरूं नांव सने सदा सुचं ||
जपंते जुगत्या ग्यान डोरं।।सर्ब कर्मा सर्ब भर्मा नासंते न्यासी।।३||

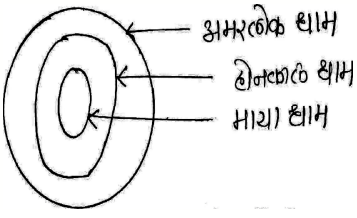

अमरलोक याने अमरधाम साकारी माया के मृत्युलोक, स्वर्गलोक,पाताललोक समान महाप्रलय मे मिटता नही ।

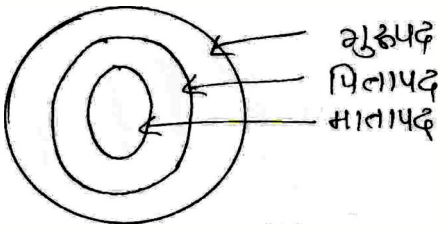

अमरलोक माता तथा पिता से न्यारा ऐसा गुरुपद है । माता के पद मे याने तीन लोक चौदह भवन मे बावन अक्षरो का नाम है तो गुरुपद मे याने अमरलोक मे बावन अक्षरो के परे का निजनाम है । उस गुरुनाम से अमरलोक के सभी संतो को स्नेह है । वह नाम पवित्र है । वह नाम तीन लोक के बावन अक्षरो के नाम समान काल के मुख मे डालनेवाला अपवित्र नाम नही है । ऐसे पवित्र गुरुनाम को युक्तीसे याने सतस्वरुप के ज्ञान की डोर से याने लिव से जपने से हंस के घट मे सतस्वरुप विज्ञान ज्ञान प्रगटता । ऐसा सतस्वरुप विज्ञान ज्ञान हंस के घट मे रुम रुम मे प्रगटने से हंस के सभी कर्म नष्ट हो जाते और साथ मे माया के सुख सत्य भासने का याने भ्रमो का नाश हो जाता ।।।३।।

हंसा हंसी निर्मला ।। निर्पाप ।। निर्दोष ।।
निर्भे नांव त्रिलोक ।। नही लिपंते अलेक नांव ।।४।।

गुरुनाम युक्ती से जपके अमरलोक मे पहुँचे हुये हंस–हंसनी वहाँ पाँचो विषयो के वासना रहीत ऐसे निर्मल रहते । वहाँ पहुँचे हुये हंस–हंसनी मे किसी प्रकार के विकार नही रहते ऐसे वहाँ के सभी हंस हंसनी निष्पाप तथा निर्दोष रहते । हंस–हंसनीमे यह निजनाम गुरुसे स्नेह होने पे प्रगटता । त्रिलोक के नामकी साधना करके हंस जो नाम प्रगट करता उसे काल खाता यह भय रहता । गुरुसे स्नेह करके जो नाम हंस अपने घट मे प्रगट करता वह नाम निर्भय रहता उसे काल नही ग्रासता । वह गुरु नाम माया से लिपटा नही रहता इसलिये उसे काल नही ग्रासता । यह गुरुनाम कागज पे लिखे नही जाता ऐसा न लिखनेवाला अलेख है ।।।४।।

अजर नांव ।। अजीत नांव जिभ्या धारं ।।
नांव रटंते मुखा बिंदं ।। सासा न सागे निराधार निरलेपं ।।५।।

यह गुरुनाम अजर है याने त्रिलोक के बावन अक्षरोके अन्य नाम समान महाप्रलयमे मिटता नही । यह गुरुनाम अजीत है । इस नाम को होनकाल मे कोई जीत नही सकता याने इस नाम के आधार से हंस को अमरलोक मे जाने से होनकाल मे कोई भी अटका नही सकता । राम नाम मुखसे याने जीभसे रटने से अजरनाम यानेही अजीत नाम यानेही गुरुनाम यानेही निजनाम की प्राप्ती हंस को होती । प्रगट हुवावा सतनाम बिना श्वास तथा बिना जीभ के आधार से सदा प्रगट रहता । यह गुरुनाम निरलेप है याने किसी भी प्रकार से माया के अंदर लिपायमान नही है ।।।५।।

साखी ।।

राम रतन सुखराम क्हे ।। नेड़ा धऱ्यां निराट ।।
बिन सत्तगुरू सूजे नही ।। आडां ओघट घाट ।।६।।

अमरलोकमे पहुँचानेवाला यह रामनामरुपी रत्न याने ही सतशब्द हर हंस के बहोत नजदिक धरा है फिर भी यह नामरत्न उसके आडे अनेक बिकट घाट होने के कारण सतगुरु के बिना सुजता नही ।।।६।।

आ सायद गुण बेद मे ।। संता कही बजाय ।।
बिन सत्तगुरू सुखराम कहे ।। अमर लोक नही जाय ।।७।।

रामनाम याने सतशब्द से ही अमरलोक मे जाते आता यह साक्ष ब्रम्हा ने अपने वेदो मे तथा संतो ने अपने अणभै वाणी मे बजा बजा के कही है । ऐसा यह नाम रत्न हर एक के एकदम नजदिक याने रोम रोम मे भरा है फिर भी सतगुरु के सिवा उसके आडे मन,काम,क्रोध,लोभ, मोह,मत्सर और शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध यह पाँच विकार,त्रिगुणी माया तथा काल के बनाये हुये ज्ञान,ध्यान तथा करणीयाँ ऐसे अनेक बिकट घाट होने के कारण प्रगट किये नही जाता । इसकारण हंसको अमरलोक नही जाते आता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर–नारीयो को कहते है ।।।७।।

रूम रूम मे रम रहया ।। सुणज्यो सिरजण हार ।।
बिन सत्तगुर सुखराम क्हे ।। प्रगटे नही लगार ।।८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,सिरजनहार परमात्मा यह हंस के शरीर मे रोमरोम मे रम रहा है मतलब एकदम निकट है फिर भी सतगुरु के शरण बिना किसी को भी प्रगट नही करते आता ।।।८।।

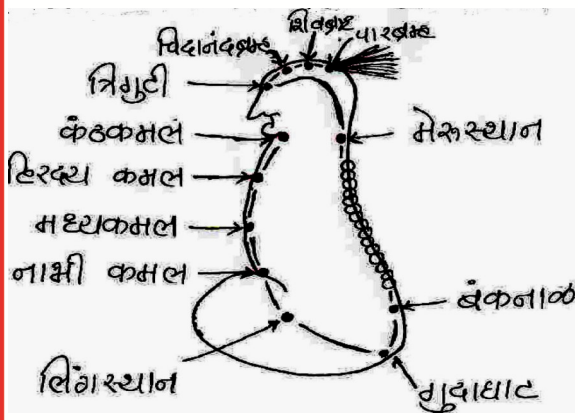

साचा सत्तगुरू जब मिले ।। शब्द बतावे भेद ।।
सुखराम नांव जब प्रगटे।। चढे कंवळ षट छेद।।९।।

हंस को जब सच्चे सतगुरु मिलेगे और शब्द का भेद दिखायेगे तब नाम हंस के शरीर मे प्रगट होगा और वह सतनाम हंस के देह मे पूरब के छःकमलो को छेदन करेगा और हंस को अमरलोक मे ले जायेगा ।।।९।।

आ सत्तगुरू की पारखा ।। सुण लीजो सब कोय ।।
निर्भे वायक कह रहया ।। ध्यान सिखर मे होय ।।१०।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की पूर्ण सतगुरु निर्भय देशका याने जहाँ काल नही पहुँचता ऐसे देश का ज्ञान कथते रहते और उनका ध्यान सिखर मे याने अमरलोक मे सदा रहता । इस भेद से ही सतगुरु अमरलोक मे पहुँचानेवाले है या नही यह सतगुरु की परीक्षा की जाती ऐसा सभी नर–नारी तथा ज्ञानी,ध्यानीयो को आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते । ।।१०।।

ध्यान परख सुखरामजी ।। चोड़े कहुँ बजाय ।।
नेण उलटर पट लगे ।। देह अधर ठेहरांय ।।११।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सतगुरु का ध्यान सिखर मे याने अमरलोक मे रहता इसकी परीक्षा स्पष्ट रुप से हर नर–नारी तथा ज्ञानी,ध्यानी को समजे इसप्रकार बजा बजा के बता रहे । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,ध्यान समाधी मे सतगुरु की आँखे उलटती और अंदर के पट लग जाते । ध्यान समय मे उनका देह बिना(जीव)चेतन और बिना साँस से अधर ठहर जाता ।।।११।।

छन्द जात भुजंगी ।।

त्रिलोक मांहि नही आस बासा ।। मुवा न मरसी सोगन सासा ।।
हरता न क्रता सर्ब सुख दाई ।। हे प्र पूरण आवे न जाई ।।१२।।

ऐसे सतगुरु को त्रिलोकी के सुखो की कोई आशा नही रहती और ऐसे सतगुरु की त्रिलोक मे बस्ती भी नही रहती । वे सदा ३ लोक १४ भवन और पारब्रम्ह के परे अमरलोक मे रहते । उनकी त्रिलोक मे बस्ती नही रहती इसका अर्थ वे मर गये या मरेंगे ऐसा नही है । वे विज्ञान दिव्य स्थिती मे पहुँचे रहते । उन्हे दिव्य विज्ञानी नेःअंछरी याने सतस्वरुपी देह प्राप्त हुवा रहता । उन्होने सतनाम से होनकाली मायावी देह गला दिया रहता और सतस्वरुपी देह प्राप्त किया हुवा रहता । जैसे जगत मे दुसरे साधको का पाँच तत्व के देह के साथ मायावी देह मरता और पाँच तत्व के देह के साथ दुसरा मायावी देह कर्म भोगने के लिये प्राप्त होता ऐसा सतगुरु का नही होता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,अमरलोक मे कोई मरता ही नही इसलिये सतगुरु को मरे हुये का दुःख नही होता तथा वहाँ कोई मरेगा इसकी उन्हे फिकीर भी नही रहती । वे सतगुरु होनकाल के समान माया के सुखो के कर्ते भी नही और मायाके दुःखोके हरते भी नही । वे सतगुरु स्वयम् सभी सुखदाई है याने अमरलोक के सुखो के कर्ते है । वे सतगुरु सभी सुखो से परीपूर्ण है । वे सुखो के लिये कही आते भी नही तथा कही जाते भी नही । उन सतगुरु से ही सभी सुख प्रगटते । जैसे पारब्रम्ह मे से हंस माया के सुख लेने के लिये मृत्युलोक मे आते । वहाँ सुख अपूर्ण(अधुरे)पडे तो स्वर्गादिक मे जाते ऐसे वे सतगुरु कही आते जाते नही ।।।१२।।

किलोळ लीला इम्रत धारा ।। ले हंस हंसनी ये सुख सारा ।।
अखुट खुटे तूटे न कोई ।। हीणे न खीण नही एक सोई ।।१३।।

अमरलोकमे क्रिडा तथा लिलाये अनंत प्रकारके महासुख देनेवाली है । वह देश अमृत की धारा याने देह को सदा अमर रखनेवाले अमृत से भरा हुवा है । उस देश मे यहाँ से जानेवाले हंस–हंसनी अनंत प्रकारसे सुख लेते । वहाँ नर–नारी ऐसा अलग–अलग भिन्न लिंग भेद नही रहता । वहाँ सभी हंसो के एकसरीखे ही स्वरुप रहते । उस देश मे अखूट

याने न खुटनेवाले सुख रहते । वहाँ के सुख त्रिलोकी सरीखे टुटनेवाले याने खतम् होनेवाले नही रहते,कम होनेवाले नही रहते । वहाँ के सुख लेने से वे हिन भी होते नही याने हलके भी होते नही और क्षिण याने कम भी होते नही । वे सभी सुख सदा एकसरीखे ही सुख देनेवाले बने रहते ।।।१३।।

हे सत रूपा वे सम द्रिष्टी ।। हे नांव न्यारा ब्रम्ह न भृष्टी ।।
हे देस देसा सत धाम धामा ।। जाहाँ हंस हंसनी नह कर्म कामा ।।१४।।

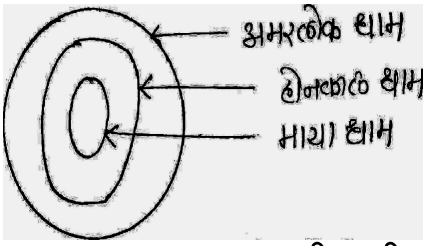

वहाँ के सभी हंस–हंसनी के रुप सत है । त्रिलोकीके समान असत या नाश पानेवाले नही है । वे सभी संत समदृष्टी स्वभाव के है । त्रिलोकी समान विषमदृष्टी स्वभाव के नही । ऐसा वह गुरुनामपद पारब्रम्ह तथा माया से न्यारा है । वह गुरुनामपद पारब्रम्ह भी नही और माया भी नही है । वह सतस्वरुप देशोदेश याने होनकाल और माया मे ओतप्रोत है । तथा होनकाल के परे भी भरपूर है । उस सतस्वरुप के धाम मे माया के ३ लोक १४ भवन तथा पारब्रम्ह के ३ ब्रम्ह के १३ लोक समान अमरलोको का सत्तधाम है ।उस सतस्वरुप के धाम मे गुरुनाम के आधार से गये हुये हंस–हंसनी रहते है । वे सभी हंस–हंसनी विज्ञान स्वरुपी है । त्रिलोक मे के सभी हंस–हंसनी कर्म काल मे लिपायमान है परंतु अमरधाम के हंस–हंसनी कर्मकाल से मुक्त ऐसे ने:कर्मी है । वहाँ के सभी हंस–हंसनी ने कामी है । जैसे त्रिलोक के हंस–हंसनी कामी याने शब्द, स्पर्श,रुप,रस,गंध तथा वेदो के करणीयो मे रचेमचे रहते वैसे वे नेकभर भी नही है।।१४।।

हे भोग भारी केता न आवे ।। पाप न पुन्न नही दोस गावे ।।
सबे सुख संपत में तें न क्रोधो ।। हंस नांव हंसनी महा रूप सोधो ।।१५।।

वहाँ के भोग बहुत भारी तरह के है । वहाँ के भोग यहाँ शब्दो मे या वस्तू मे बताते नही आते । वहाँ कोई नरकीय जीव के समान पापी भी नही तथा स्वर्गादिक के जीव के समान पुण्यवान भी नही । वे हंस किसीके बारे मे दोष भी नही गाते । वहाँ सुखो के लिये लगनेवाली सभी संपत्ती है । वहाँ त्रिलोकी के जैसा किसी के उपर किसी को क्रोध भी नही आता । वहाँ रहनेवाले हंस के देह का रुप यहाँ के मनुष्य देह के रुप से बहोत बडा है । उस रुप को जब तक प्राप्त नही करते तब तक उस रुप को सतज्ञान से ही समजना पडता । दुजी समजाने के लिये कोई भी नकल वस्तू त्रिलोक मे नही है ।।।१५।।

सत्त रूप काया सत रूप माया ।। सत्त रूप सब चीज सेंजा बताया ।।
दुख रूप कामा ब्यापे न कोई ।। सुखरूप कामा महा बेग होई ।।१६।।

वहाँ की काया सतस्वरुप ध्वनी की बनी है । इसलिये वहाँ की काया सत यानी तीन लोको के पाँच तत्वके काया समान मरनेवाली नही है । वहाँ की सभी माया सतस्वरुप ध्वनी की है । त्रिलोकी के समान मरनेवाले पाँच तत्वो की नही है । वहाँ सभी चिजे

कुद्रती बनी है । यहाँ के समान कृत्रिम रिती से बनाने नही पडी इसलिये वहाँ सभी चिजे सहज मे उपलब्ध है । वहाँ पे काल खायेगा ऐसे एक भी सुख की कामना हंसको व्यापती नही परंतु वहाँ काल नही खायेगा ऐसे सुखरुपी कामना बहोत जल्दी जल्दी व्यापती ।।।१६।।

जो सुख चावे से सुख सारा ।। सनमुख आवे ले हंस प्यारा ।।
सुखरूप कामा बोहो बिध सारा ।। महा तेज लीया ले हंस न्यारा ।।१७।।

वहाँ के हंस जिस सुख की चाहना करते वे सभी सुख सामने प्रगट हो जाते । हंस को प्रगट हुयेवे सुख मे से जो सुख प्यारे लगते वे सुख वे हंस ले लेते । वहाँ पे हंसो को कुद्रती ही काल के दु:ख से मुक्त ऐसे अनेक प्रकार की सुखरुपी कामनाये याने चाहनाये व्यापती । जो जो चाहनाये उपजती वे सभी सुख कुद्रती ही सनमुख आकर प्रगटते । वहाँ के सभी हंस महातेजवान है और वे वहाँ पे अपने अलग-अलग दिव्य सुख लेते रहते है ।।।१७।।

त्रिलोक मांही पद नांव माया ।। सत लोक मांहि सत पद भाया ।।
यां चीज माया वां चीज अक्खी ।। यां चीज कच्ची वां चीज पक्की ।।१८।।

त्रिलोकी के पद का नाम माया है याने हंस को सामने सुख देनेवाली दिखती परंतु सदा सुख देनेवाली नही रहती ऐसे असत रहती । सतलोक की माया हंस के सामने कुद्रती प्रगटती सदा सुख देनेवाली रहती ऐसे सत रहती । इसलिये आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है यहाँ की सुख देनेवाली चिजे नाश होनेवाली है मतलब हंस को सदा सुख देने के लिये कच्ची है और वहाँ के चिजे नाश न होनेवाली अखंड है इसलिये वहाँ के चिजे हंस को सदा सुख देने के लिये पक्की है ।।।१८।।

इण चीज मांही सुख दु:ख दोई ।। उण चीज माही श्रब सुख होई ।।
ये दोय चीजा ब्रम्ह लेण हारो ।। बिन चीज ब्रम्ह आप सुन रूप प्यारो ।।१९।।

त्रिलोकी के माया के चिजो मे सुख और दु:ख दोनो भी है । सतस्वरुप के चिजो मे सभी दु:ख रहीत कोरे सुख ही सुख है । यह दोनो चिजो को याने माया के और अमरलोक के सुखो को ब्रम्ह याने हंस ही लेनेवाला है । इन दोनो सुखो के बिना हंस बिना सुख-दु:ख का ऐसे पारब्रम्ह स्वरुप का ब्रम्ह बनता ।।।१९।।

जो हंस माया त्यागे जो कोई ।। तो आप ही ब्रम्ह पदवी न होई ।।
सुख दु:ख रेतां ब्यापे न कोई ।। आ रीत प्रब्रम्ह के धाम होई ।।२०।।

त्रिगुणी मायाके सुख यहाँ जो हंस त्यागता वह हंस पारब्रम्ह की ब्रम्ह पदवी पाया हुवा ब्रम्ह बनता । उस हंस को माया के सुख और काल के दु:ख नही व्यापते । हंसको सुख-दु:ख न व्यापने की रीत परब्रम्ह के धाम मे है ।।।२०।।

श्रब सुख को सुख सत्त पद मांही ।। क्रत रूप माया को लेस नाही ।।

सत्त रूप सत चीज सत्त पद जाणो ।। ज्यां चीज क्रतब बिन पूर ठानो ।।२१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी को कहते है की,कोरे सुखो का ही सुखो का पद यह सतस्वरुप का पद है । उस पद मे दु:ख देनेवाली कृत्रिम माया का लेश भी नही है । वहाँ की सभी चिजे सतस्वरुप की है । त्रिलोकी समान असतस्वरुपी नही है । ऐसा वह सतपद है उसे सभी नर–नारी,ज्ञानी–ध्यानी पहचानो । वहाँ बिना किसी करतुत याने उद्यम से सुखो की अपार,अनंत चिजे प्रगट है ।।।२१।।

जो चीज चावे हे काया बिचारी ।। सो चीज भरपूर बिन दाम सारी ।।
नही आड़ अटकाव हटके न कोई ।। नही चीज काजे पचणो न होई ।।२२।।

वहाँ हंस जो जो चिजकी चाहना करता वे सभी सुख देनेवाली चिजे फुकटमे भरपूर प्रगट होती । वहाँ पे त्रिलाकी के समान सुखो की चिजे दाम देकर खरेदनी नही पड्ती । अमरलोक मे वे चिजे उपभोगते वक्त कोई भी आडा नही आता । माया के लोक मे माया कैसे आडी आती इसका एक छोटासा दाखला देखेंगे । दाखला–किसीको शक्कर की भारी बिमारी है और उसे शक्कर की वस्तू खाने की चाहना उठी है । उसने मिठी वस्तू खाई तो खुन मे शक्कर बढती है । खुनमे शक्कर बढी तो स्वास्थ बिघड्ता है । इसलिये लोक तथा डॉक्टर शक्कर की वस्तू खानेके आडे आते है । उनकी बात नही मानी और शक्कर की वस्तू खाई तो शरीर आडा आता है । याने बिमार गिरता है और बिमारीके दु:ख भुगतने पड्ते है । ऐसा अमरलोकमे नही होता । वहाँ का शरीर ही निरोगी है । विज्ञान स्वरुप का है । माया के समान नाशवान स्वरुप का नही है । इसलिये वहाँके शरीर को कोई बिमारी नही रहती । इसलिये वहाँ मिठी,खट्टी, अनुपम सभी चिजो के सभी सुख भरपूर लेते आते । वहाँ शरीर भी बिन रोग का है और चिजे भी भरपूर है फिर चाहिये वैसे अनेक प्रकार के मिठी चिजे खावो वहाँ पे मनाई नही है । ऐसे जगतमे छोटे–मोटे अनेक दाखले है । यह बहोत ही छोटासा दाखला दिया है । वहाँ बिना दामकी अनंत चिजे है इसलीये चिजे लेनेवालो को चिजे लेने से कोई रोकता नही या हटकता नही । वहाँ सभी चिजे सहजमे उपलब्ध है इसलिये उन चिजोको पानेके लिये कभी कोई भी पचता याने मेहनत करता नही । वहाँ सभी चिजे बिना मेहनतसे सदा उपलब्ध रहती । ।।२२।।

नही मोल आवे नही तोल देणी ।। उर मे सो चावे सो सत लेणो ।।
लिला सरूपी वां रीत सारी ।। ना ना प्रकारां रंग राग भारी ।।२३।।

वहाँ चिजे अनंत होने के कारण त्रिलोकी समान कोई भी वस्तू बिकती नही तथा त्रिलोकी समान खरीदनी भी नही पड्ती । वहाँ पे कोई किसीसे वस्तू तोलकर लेता नही तथा तोलकर देता भी नही । जिसके मन मे जो आता वही वस्तू वह वहाँ ले लेता है । वहाँ का जीवन लिला स्वरुपी याने खेलकुद के समान है । जिसे जितना खेलना है खेलो याने सुख लेना है ले लो, नही लेना है मत लो छोड दो,दुजा सुख उपलब्ध है ही ऐसा खेल

कुद के समान सुख लेने की रीत है । वहाँ के सभी सुख नाना प्रकार के भारी भारी रंग राग से भरे है त्रिलोक के समान किसी भी प्रकार की उब आनेवाले सुख वहाँ नही है ।।।२३।।

नही सोच दूजो ब्यापे न जाणे ।। केळा करण रीत बोहो बिध आणे ।।
बिन चंद बिन सूर हे तेज भारी ।। नही रेण की लेस नीद्रा बिचारी ।।२४।।

वहाँ पे त्रिलोक समान किसी भी तरह की चिंता नही रहती तथा चिंता होती भी नही और किसी को किसी भी प्रकार की फिक्र भी नही होती । वहाँ पे सभी हंस अनेक तरह की क्रिडा करने की याने सुख लेने की रित जानते और वे सदा बहुत तरह से सुख लेने की क्रिडा याने खेल करते । वहाँ चाँद तथा सुरज के बिना बहोत भारी सुहावना तेज याने उजाला रहता । वहाँ रात लेश मात्र भी नही है और वहाँ निद्रा का बिचार तो कोई जानता ही नही ।।।२४।।

हे तेज रूपी सबे हंस सारा ।। द्रब रूप काया कोटां उजीयारां ।।
रहे रूंम मांही ये तेज जाणो ।। इण सूरज को तेज नकल न आणो ।।२५।।

वहाँ के सभी हंस तेजवान है । उन हंसो की दिव्यरुपी काया है । एक एक हंस का एक करोड सुरज सरीखा आनंद देनेवाला सुहावना उजाला उनके एक एक रोम मे से उदित होता । यहाँ के सुरजका तेज उस तेज की नकल समजमे आयेगा इतना भी नही है । ऐसी उस देशके हंस की काया दिव्यरुपी तेज की है ।।।२५।।

चंद सूर तारा सबे अेक कीजे ।। ऊण हंस के रूम नकल न लीजे ।।
वां सब ही हंस हे जोत धारी ।। इण काज उण देस नही रेण प्यारी ।।२६।।

यहाँ के चाँद सुरज तथा सभी तारो का प्रकाश एक जगह इकठ्ठा किया तो भी वहाँ के हंस के एक रोमके तेज समान नकल रुपमे भी नही पकड्ते आता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । वहाँ के सभी हंस दिव्य ज्योती सरीखे प्रकाशमय है इसकारण उस देश मे रात नही होती ।।।२६।।

सब हंस के शिर रहे छत्र छाया ।। अब देह को रूप कहुँ दिष्ट आया ।।
छोटीसी काया हे क्रांत भारी ।। दस गज की देहे ले हंस धारी ।।२७।।

उन सभी हंसोके सिर पर कुद्रती ही छत्र की छाया रहती । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है उनकी देहका स्वरुप मेरे दृष्टीमे आया वह मै बताता हुँ । उनकी काया छोटी है परंतु उनके देहकी क्रांती याने पराक्रम बहुत भारी है । वहाँके एक एक हंस का देह दस गज का है । ।।२७।।

सो गज न्यारा नही अे जाणो ।। दस गजको गज वो पाव ठाणो ।।
वां देह अेसी महारूप लीया ।। कहता न आवे गत कोट कीया ।।२८।।

अमरलोक का गज मृत्युलोक के गज से न्यारा है । वहाँ का गज मृत्युलोक के गज के

समान गज नही समजो । मृत्युलोक के दस गज का वहाँ पाव गज होता है ।

अमलोक मे		मृत्युलोक मे
१/४ गज	=	१० गज
१ गज	=	४० गज
१० गज	=	४०० गज

मृत्युलोक के गज से वहाँ की काया गिनी तो ४०० गज भरती ।

१ गज	=	३ फिट
४०० गज	३ फिट =	१२०० फिट

ऐसी वहाँ के संत की काया मृत्युलोक मे के फिट से १२०० फिट की भरेगी ।

ऐसा यह १२०० फिट का बडा महारुपवान देह अमरलोक मे रहता ।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की उस देह का मै वर्णन बताने की कोशिश करता हुँ फिर भी मुझसे जैसे का वैसा वर्णन नही किये जाता । मै वर्णन कर रहा हुँ उसकी अपेक्षा सौ लाख गती उस देह को जादा जानो ।।।२८।।

यां चंद सूरज ताराज होई ।। मिण रूप पदम रतन नग सोई ।।
इण तेज को रूप ऊण देस नाही ।। क्या कर कहिये कहयो काहां जाई ।।२९।।

यहाँ का चाँद,सुरज,सभी तारे,सभी चंद्रमणी समान मणी,सभी रत्न,पद्म मणी सरीखे रुप के सभी नग आदि मिलके जो तेज बनता ऐसे तेज के रुप की उस देश मे नकल भी देखने नही मिलती ऐसा उस देश का तेज दिव्यरुप है । वहाँ के तेज की तुलना जगत के नर-नारीयो को कहने की कोशिश भी की तो भी कहाँ नही जाता ऐसा बडा सोच मेरे सामने है ।।।२९।।

यां अेक अेनाण नकल न होई ।। बिन ग्यान भ्यासा सूजे न कोई ।।
आं नकल हे नेक इण जुग मांही ।। सत्तगुर को ग्यान गुरू गम जांही ।।३०।।

यहाँ तीन लोकमे उनका निशाण या नकल कुछ भी नही है कि जिसे उसकी बराबरीमे लगाकर दिखाया तो यहाँके हंसोको समजेगा । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,ज्ञानके भास याने समज बिना वहाँका स्वरुप,तेज,चिज किसीको कुछ भी सुजेगी नही। ज्ञानका भास होनेपे वहाँके वस्तूवोकी कुछ समज आयेगी यही एक छोटीसी नकल इस जगतमे है । इसप्रकार सतगुरुके ज्ञान सिवा अन्य कोई चिजसे गुरु देशकी समज नही आती ।।।३०।।

इण तेज नकल वां जोत जाणो ।। ज्युं ज्ञान केवळ हिरदे पिछाणो ।।
अेहे लोक माही अे नकल होई ।। सत लोक की नकल नही ओर कोई ।।३१।।

जैसे कोई भरपूर प्रकाश के वस्तू को ज्योती का प्रकाश नकल रुप मे देखकर समज मे लाते आता वैसेही वहाँ के कैवल्य विज्ञान ज्ञान की बाते गुरुज्ञान से हदय मे पहचानना

पड्ता । इस मृत्युलोक मे अमरलोक को गुरुज्ञान से पहचानना यही एकमात्र नकल है । उस सतलोक को यहाँ मृत्युलोक मे पहचान ने की दुसरी कोई नकल नही है ।।।३१।।

कह सुखदेव सुणो चित्त गोई ।। सत लोक को सुख इण रीत होई ।।
नही तोल नही मोल नही माप आवे ।। सतगुर सन्मुख से हंस पावे ।।३२।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी हंसोको चित्त लगाकर सुनने को कहते है की सत्तलोक के सुख का मृत्युलोकमे कोई माप नही करते आता,कोई किमत भी नही लगाते आती और उसे बजन मे भी तोलते नही आता मतलब सत्तलोक की वस्तू मृत्युलोक मे किसी वस्तू के बराबरी या नकल रुप मे दिखाते नही आती ऐसा अनूप अनंत सुखो के चिजो का वह देश है । वह सुख हंस को सतगुरु के सन्मुख जाने पे ही मिलेंगे । जो सतगुरु के शरण मे जायेगा नही उसे अमरलोक के अनूप सुख कभी नही मिलेंगे ।।३२।।

रेखता ।।

सत का लोक मे सत्त ही सत हे ।। असत को नांव सो नाही जाणे ।।
सत का पेरणा सतका ओढणा ।। सत का सुख सो सरब माणे ।।
सत की देह अर सत का राछ सो ।। सत्त का मेहेल अे वास होई ।।
सत की ईंद्रियाँ सत की चीज सो ।। सत्त का लेण अर देण दोई ।।
माया का लोक में माया सो चीज हे ।। ग्यान कर देखलो सरब सारा ।।
दास सुखराम क्हे सतका लोक में ।। सत का सुख हे अखंड प्यारा ।।१।।

सत्त के लोक याने अमरलोक मे सभी सत्त ही सत्त है । वहाँ असत का नाम कोई भी जानता नही । वहाँ तीन लोक समान मायारुपी मिटनेवाली वस्तू कोई भी जानता नही । वहाँ शरीरपे सत्त के वस्त्र पहनना है और सत्त के ही वस्त्र ओढणा है । वहाँ के सभी सुख सत्त के है । वे सत्त के सुख सभी हंस भोगते है । वहाँ सत्त का शरीर है । वहाँ रहने के महल तथा मकान सत्त के है । वहाँ के शरीर की इंद्रियाँ भी सत्त की है । इसप्रकार वहाँ की सभी चिजे सत्त की है और वहाँ लेन-देन भी सत्त का ही है । इस माया के लोक मे सभी चिजे माया की है । यह गुरुज्ञान करके सभी नर-नारी देख लो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,उस सत्तके लोक मे सभी सुख सत्त है,अखंड्ति है,मायाके समान मिटनेवाले नही है इसलिये वहाँ के सभी सुख सबको प्यारे है ।।।१।।

कुंडल्यो ।।

मे बोपारी ग्यान का ।। ओर बिणज नही कोय ।।
जे तुम चावो मोख कुं ।। तो ग्यान बिणज लो जोय ।।
ग्यान बिणज लो जोय ।। कसर राखो मत कांई ।।
जो चाहो सोई ग्यान ।। आण बूझो मुझ भाई ।।
सुखराम इसा देवाल हे ।। हे कोई लेणे हार ।।
अमर लोक ले जाव सूं ।। जामे फेर न सार ।।२।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,मै मोक्ष के ज्ञान का बेपारी हुँ । मेरे पास मोक्ष के ज्ञान सिवा माया के परचे चमत्कार का जरासा भी बेपार नही है । अगर तुम मोक्ष चाहते हो तो तुम मेरे पाससे मोक्ष प्रगट करनेका ज्ञान विज्ञान ले लो । मेरे पास से ज्ञान विज्ञान लेने मे कुछ भी कसर मत रखो । अमर लोक पहुँचने का जो कुछ ज्ञान लगता होगा वह ज्ञान विज्ञान मुझे पुछ लो । तुम्हे मै वह ज्ञान विज्ञान भिन्न भिन्न प्रकारसे समजा दूँगा । मै ऐसा ज्ञान विज्ञान देनेवाला बेपारी हूँ कि जो कोई विज्ञान लेनेवाला है उसे मै विज्ञान का भेद देकर मेरे साथ अमरलोक ले जाऊँगा । मेरा ज्ञान विज्ञान धारन करनेवाले हंसका अमरलोक जानेमे जरासा भी अंतर नही पडेगा ।।।२।।

कवत ।।

अमर लोक ने जाय ।। जको रस्तो कहुँ तोही ।।
सुणो सकळ नर नार ।। कसर राखुं नही कोई ।।
ओ तन ओ बेराट ।। जिकण सुं न्यारो क्रावे ।।
अेक बिस ब्रहमन्ड ।। चूर बिरळा जन जावे ।।
सुखराम अधर सत लोक हे ।। अधर जमी वां जाण ।।
वां देख्या आ अेथली ।। कर नर हात पिछाण ।।३।।

जीस रास्ते से अमरलोक में हंस जाते है,वह रास्ता में तुम्हे बताता हुँ । वह रास्ता सभी नर–नारीयो सुणो । मै वह रास्ता बताने में कोई भी कसर नही रखूँगा । वह अमरलोक इस पिंड से तथा खंड–ब्रम्हंड बैराटसे परे है । उस अमरलोकमें शरीरके २१ ब्रम्हंड याने २१ स्वर्ग चुरकर जाना पडता । २१ स्वर्ग चुरकर जाना बहोत कठिण है । इसलिए अमरलोक बिरलाही संत जाते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है वह सतलोक अधर है । वहाँ की जमीन भी अधर है । जैसे मनुष्य की हथेली अधर रहती,उसे किसीका टेका नही रहता वैसा वहाँ वह अमरलोक देखने पे हथेली के समान बिना टेकेका दिखता ।।।३।।

कुंडल्या ।।

कळ जुग वारो मोख को ।। भरत खंड के मांय ।।
भजन करे सो जीव रे ।। बारे उपजे आय ।।
बारे उपजे आय ।। ग्यान केवळ घट आवे ।।
अर दरसण कर कर हंस ।। मोख क्रोडा लख जावे ।।
सुखराम चोईसी प्रगटे ।। सत जुग त्रेता मांय ।।
कळ जुग बारो मोख को ।। भरत खंड के मांय ।।४।।

कलियुग मे मोक्ष का वारा याने अमरलोक मे सहज जाने का समय इस भरत खंड मे आता । जिस जिस हंस ने पहले परमपद का भजन किया है परंतु वे अपूर्णत: के कारण मोक्ष मे नही पहुँच पाये ऐसे सभी जीव मोक्ष मे सहज जाने के समय भरत खंड मे जनम

लेते । ऐसे सभी हंस भवतारी संत के दर्शन करते ही याने शरण मे आते ही उनके घट मे केवल ज्ञान विज्ञान प्रगट होता और वे मोक्ष मे जाने के अधिकारी बन जाते । जैसे सतयुग,त्रेतायुग,द्वापारयुग मे चोबीस तिर्थंकर प्रगट होते और उनके साथ करोडो हंस मोक्ष मे जाते उसीप्रकार कलियुग मे भवतारी संत भरतखंड मे प्रगटते तब उनके सत्ता से करोडो लाख हंस मोक्ष मे जाते ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते ।।।४।।

भगवत बीसी नित नवी ।। बदे खेतर मांह ।।
अेक भवतारी संत जन ।। जनम धरे वां आय ।।
जनम धरे वां आय ।। मोख वां सुं हंस जावे ।।
अर बिन दरसण भगवंत ।। ग्यान घट मे नही आवे ।।
सुखराम सदाई वां समो ।। हंस मोख नित जाय ।।
भगवत बीसी नित नवी ।। बेद खेतर माय ।।५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,इस विदेही क्षेत्र में बीस भगवंतो का निवास सदा कायम रहता । इन बीस भगवंतो में से कोई भी भगवंत धाम पधारने के बाद वह सत्ता दुसरे नये भगवंत में जागृत हो जाती । इसतरह बीस भगवंत यहाँ कायम रहते,वे कम होते नही । षटदर्शन अंगनुसार आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,

केई जनम शुभ कर्म करे, तब प्रगटे भक्त अंकूर
ऐसे शुभ कर्म कराने की रित इन बीस भगवंत के पास रहती ।

इन शुभ कर्मो से हंस के मोक्ष जाने के सुकृत बनते । जब भरतखंड में भवतारी संत आते है (भवतारी संत याने एकही जनममें हंसको मोक्ष ले जानेवाले संत)तब बीस भगवंतके आधारसे परंतू अमरलोक में न पहूँचे हुए हंस भरतखंड में जनमते और भवतारी संत के दर्शन याने विग्यान ग्यान घटमें धारण करके अमरलोक में जाते । जो हंस भवतारी संत के दर्शन याने विग्यान ज्ञान घट में धारण नही करते वे हंस मोक्ष में नही जाते । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की अमरलोक जाने का रास्ता चोबीस तिर्थंकरोद्वारा,बीस भगवंतोद्वारा तथा भवतारी संतद्वारा सदाही किसी ना किसी के आधारपर चलते ही रहता याने हंस मृत्यूलोक से अमरलोक में नित्य जाते रहते । ऐसा मोक्षमें जाने का समय हमेशा ही भरतखंडमें रहता ।।।५।।

ओ तो रस्तो बह रह्यो ।। निमख ढील नही खाय ।।
समो आया सुखराम क्हे ।। क्रोड़ाई हंस जाय ।।
क्रोडाई हंस जाय ।। संत सामा चल आवे ।।
सत जळ करावे स्नान ।। अमर कपडा बण जावे ।।
अमर काया धाम रे ।। लेवे संत बधाय ।।
ओ तो रस्तो बह रह्यो ।। निमष ढील नहीं खाय ।।६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,इस तरह से अमरलोक का रास्ता नित्य बह रहा है । वह रास्ता निमिषभर भी बंद नही रहता परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मोक्षमे जानेका समय आता याने भवतारी संत जनमता तब करोडो हंस मोक्षमे जाते । जब हंस अमरलोक पहुँचता तब वहाँके संत आनंदित होकर उनके अगवानीमे सामने चलकर आते । वहाँ के संत प्रिती से यहाँ से जानेवाले संतको सत्त जल से स्नान कराते । वहाँ पहुँचे हुये संत के कपडे अमर हो जाते । वहाँ संतो के रहने के मकान अमर है । यहाँ से जानेवाले संतो का वहाँ के संत बधावा करके याने उत्सव करके मंदिर,महलो मे ले जाते ।।।६।।

अमर मिंदर मालिया ।। अमर झिरोखा मांय ।।
अमर लुंबाळु ढोलियां ।। तां मे कसर न काय ।।
तां मे कसरन न काय ।। अमर संत बिराजे सारा ।।
अटल अमर वो धाम ।। सुख को बार न पारा ।।
सुखराम अथंगा अमर सुख ।। हे ज्युं कहयो न जाय ।।
अमर मिंदर मालिया ।। अमर झिरोखा मांय ।।७।।

वहाँके मंदिर अमर है । वहाँके महल अमर है । वहाँके महलोके झरोखे भी अमर है । वहाँ की बंगईयाँ अमर है । वहाँके पलंग अमर है । यहाँके मंदिर,महल,बंगईया,पलंग समयके बाद जैसे नाश होते वैसी कसर वहाँके मंदिर,महल,झरोखे,बंगईया,पलंगमे नही है । अमर हुयेवे संत वहाँ के मंदिरो मे,महल मे,बंगईयों पे,पलंग पे बिराजते । वह धाम अटल है,नाश न होनेवाला है, अमर है । उस अमरधाम मे सुख का वारपार नही आता । वहाँ के अमर सुख अथांग है । उन सुखोका थांग नही लगता । वे सुख इतने अद्‌भूत है कि उनका वर्णन मुखसे किया नही जाता ।।।७।।

अखंड सुख अनंद लोक में ।। सब ही हाजर होय ।।
अमर लोक का संत रे ।। केल करे कहुं तोय ।।
केल करे कहुं तोय ।। आनंद उच्छाव सदाइ ।।
धिन धिन कह महाराज ।। कमी कसर नही काई ।।
द्रब उजाळा अंग मे ।। बडा पुरष कहुं तोय ।।
अखंड सुख अणंद में ।। सब ही हाजर होय ।।८।।

उस आनंदलोक मे सभी खंडित न होनेवाले अखंडित सुख है वे हंसके सामने आकर हाजिर होते । वहाँ अमरलोक मे रहनेवाले संत भिन्न भिन्न प्रकार की क्रिडा करते,लिला करते,खेल करते इसकारण वहाँ सदा आनंद उत्सव चलते ही रहता । वहाँ पहुँचे हुये सभी संत धन्य है । सभी संत महाराज है । उनके महाराज बनने मे कोई कसर नही है । सभी संतो के शरीर मे दिव्य उजाला है । इसप्रकार वहाँ बिराजे हुये सभी संत बडे पुरुष है।।८।।

द्रब उजाळा होय रहया ।। द्रब जमी वां जोय ।।
सबे सरीसा संत हे ।। द्रब रूप कहुँ तोय ।।
द्रब रूप कहुँ तोय ।। द्रब चीजा सब सारी ।।
द्रब महल अे बास ।। द्रब फुली फुल बारी ।।
सुखराम द्रब सबै देस वो ।। जा रेण दिवस नहीं दोय ।।
द्रब उजाळा व्हे रहया ।। द्रब जमी वां जोय ।।९।।

अमरलोक मे दिव्य उजाला हो रहा है । वहाँ की जमीन भी दिव्य है । इस जमीन के समान नाश होनेवाली जमीन वहाँ नही है । वहाँ पहुँचे हुये सभी संतो का रुप दिव्य है । उनका रुप मृत्युलोक के लोको समान न्यारा न्यारा नही है तथा मृत्युलोक के समान कुरुप तथा सुंदर ऐसे भी नही है । वहाँ के संतो का रुप दिव्य सुंदर है और एक सरीखा है । वहाँ की सभी वस्तू दिव्य है । वहाँ के महल तथा रहने की वास्तू दिव्य है । यहाँ के महल या वास्तू समान नाश होनेवाले पत्थर,मिट्टी,काँचके बने नही है । वे मकान सोच नही सकते ऐसे दिव्य वस्तूवोसे बने है । वहाँकी फुलवारी याने फुलोके बगीचे दिव्य फुलोसे फुले हुये है । यहाँ के मुरझानेवाले फुलोके जैसे नही है । ऐसा वह पूरा देश ही दिव्य है । वहाँ मृत्युलोक सरीखी रात या दिन ये दोनो कुछ नही है । वहाँ रात या दिन ऐसे अलग–अलग कोई जानता भी नही । वहाँ सदा सुख भोगने का समय रहता ।।।९।।

बावन गादी ऊपरे ।। पुरष फिरे कहुं अेक ।।
वो सुख को सागर प्रस्तो ।। आबे पुरब लेख ।।
आबे पुरब लेख ।। जना कुं लेले जावें ।।
बड़ो पुरष तप तेज ।। बाट अटकण नही पावे ।।
सुखराम काट फंद जीव का ।। तारे हंस अनेक ।।
बावन गादी ऊपरे ।। पुरष फिरे कहुं अेक ।।१०।।

वहाँ बावन गादी है । उसपर एक पुरुष फिरते रहता । उसे फरिस्ता कहते है । वह सुख का सागर है । वह हंसो के आदि के कर्म रेखा से मृत्युलोक मे आता और यहाँ से संतो को अमरलोक लेकर जाता है । वह फरिस्ता बडा पुरुष है । उसका तप और तेज अद्भूत है । उसे हंस को अमरलोक ले जाते समय रास्ते मे कोई अटका नही सकता । वह फरिस्ता सतपुरुष जीव के माया के और काल के सभी फंद काटता और साथ मे अनेक जीवो को अमरलोक ले जाता ।।।१०।।

नो क्रोड़ जन पोहोंचिया ।। अेक चोईसी लार ।।
आगे अनंताई पोंचीया ।। अनंताई पोहोचण हार ।।
अनंताई पोंहोचण हार ।। भगत को प्राक्रम भारी ।।
जो शिंवरे निज नांव ।। मोख को व्हे अधिकारी ।।

सुखराम परम पद नांव हे || भज जो बारम्बार ||
नो क्रोड जन पोहोंचिया || अेक चोईसी लार ||११||

एक चोबीसीके साथ मे नौ करोड हंस अमरलोक मे पहुँचे । पहले भी अनंत हंस अमरलोक मे पहुँच गये और आगे भी अनंत हंस अमरलोक मे पहुँचेंगे । इस विज्ञान भक्ती का बहुत भारी पराक्रम है । जो कोई यह विज्ञान भक्ती का याने निजनाम का सुमिरन करेगा वह मोक्ष का अधिकारी बनेगा । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि यह निजनाम ही परमपद है । इसलिये सभी नर-नारी ने निजनाम का समय बेसमय बारंबार भजन करना चाहिये ।।।११।।

आद भजो जन रिषभ देव || अंत भज्यो महाबीर ||
आठ पोहोर सिवरण किया || धर चित ध्यान सधीर ||
धर चित ध्यान सधीर || इकंतर आसण कीना ||
छांड दिया सब भ्रम || जगत सुं चारत लीना ||
केवल भज केवल हुवा || चुगे हंस तहां हीर ||
आद भज्यो जन रिषभ देव || अंत भजो महाबिर ||१२||

सतयुग,त्रेतायुग और द्वापारयुग मे सभी चोबीस तिर्थंकर हुये । उसमे आदि मे ऋषभदेव और अंत मे महावीर हुये । उन सभी चोबीस तिर्थंकरो ने इस नाम का सुमिरन किया । उन्होने इस नाम को चित्त मे धारण किया और उस नाम को धैर्यपूर्वक रात-दिन भजा । चित्त को ध्यान मे एकाग्र करके धैर्यपूर्वक एकांतमे आसन लगाया और झूठे माया के सुखो को सच्चे समजने के सभी भ्रम त्याग दिये । यह चोबीस ही तिर्थंकर बडे राजा थे । बडे राजा होते हुये भी जगत से एक सबंध न रखते जगतसे न्यारे हो गये और सिर्फ एकमात्र केवल भक्ती करके केवली हो गये और सुख के सागर के हंस बनकर महासुख के हिरे चुगने लगे ।।।१२।।

अब ममता त्रपत भई || सतगुरू सरणे आय ||
बोहोत आनंद सुख ऊपना || सांसो गयो बिलाय ||
सांसो गयो बिलाय || दुख की लेस न काई ||
सब दिन सुख मे जाय || अबे नही मुड़े मुडाई ||
सुखराम आन सनमुख भई || चरणा लागी जाय ||
अब ममता त्रपत भई || सतगुरू सरणे आय ||१३||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सतगुरु के शरण मे आने से मेरी ममता याने त्रिगुणी माया के सुखो की चाहना तृप्त हो गई । सतगुरु के शरण मे आनेपर बहुत आनंद हुवा और बहुत सुख हुवा और साँसा याने सुख की फिकीर सभी मिट गई और उसीके साथ दु:ख लेसभर भी नही रहा । अब सभी दिन सुख मे व्यतीत हो रहे । अब

यह सुख पलटाने से भी पलटाये नही जाते । अब सहज मे सुख पाने की स्थिती बन गई तब जो ममता मुझे मेरे से बेमुख होके मुझे माया के सुखो को पाने के लिये होनकाल मे भगाती थी वही ममता मुझमे सतगुरु के शरण से प्रगटे हुये सुख देखकर मेरे सन्मुख हुई और वह भी मेरे समान सतगुरु के पैरो मे गिरकर मेरे सतगुरु के शरण मे आई और सुखो से तृप्त हो गयी ।।।१३।।

कवित ।।

मृत लोक का भोग ।। सरब सुख लील बिलासा ।।
कर उद्यम नर नार ।। सकळ पुरे मन आसा ।।
देव लोक का भोग ।। देव अेसी बिध पावे ।।
मन उपज्यां बिसवास ।। सरब हाजर होय आवे ।।
आई रीत बेराट ।। सरब पुरीयां मे होई ।।
अमर लोक का भोग ।। सरब हाजर कहुं तोई ।।
सुखराम परम सुण धाम का ।। कांहा सुख करूं बखाण ।।
तीन लोक में रीत हे ।। कही नकल सी जाण ।।१४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,इस मृत्युलोक के सभी भोग और मृत्युलोक के सभीही सुख,सभी लिला,सभी विलास यह नर–नारी जैसे उनके मनको सुख चाहिये वैसे उद्यम करेंगे तो उन्हे मिलेंगे मतलब उनकी सुखो की सारी आशा पूर्ण होगी । वे उद्यम नही करेंगे तो उनके मनको जो सुख चाहिये वह आशा कभी पूर्ण नही होगी । देवलोक मे पहुँचे हुये देव को जो भोग चाहिये उसका विश्वास उसके मन को आयेगा तो ही वहाँ के सभी भोग उसके सामने हाजिर होगे । वहाँ देवता को विश्वास नही आया तो उसे वे भोग नही मिलेंगे । इसप्रकारसे सुख मिलनेकी रित उस देवतावो के सभी पुरीयो मे है । मन को विश्वास आयेगा तो भोग मिलेंगे,विश्वास नही आया तो भोग नही मिलेंगे । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,अमरलोक मे हंस के सामने सभी प्रकार के भोग कुद्रती हाजिर हो जाते । उन भोगो के लिये वहाँ मृत्यु तथा देवता लोको समान कुछ भी नही करना पडता । ऐसे उस परमधाम के सुख है । उस परमधाम के सुखो का मै क्या वर्णन करके बताऊँ ?बताने के लिये यहाँ मेरे पास कोई नकल भी नही है । इसप्रकार तीनो लोको के सुखो की अलग–अलग रीत है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मृत्युलोक के तथा देवलोक के सुख सभी को समजाते आते परंतु परमधाम के सुख कैसे वर्णन करना यह मुझे नही समजता । इसलिये उस परमधाम के सुख गुरुज्ञान दृष्टी से समजना यही एक नकल है ।।।१४।।

ब्रम्ह सदाई अमर हे ।। जा का काहां बखाण ।।
अमर माया धाम हे ।। सो नर इधकी जाण ।।

सो नर इधकी जाण ।। ब्रम्ह तो डिगे न कोई ।।
जो माया तज जाय ।। अरथ बिन निकमो होई ।।
सुखराम हद बेहद लग ।। जनम मरण गत जाण ।।
ब्रम्ह सदाई अमर हे ।। जा कां काहा बखाण ।।१५।।

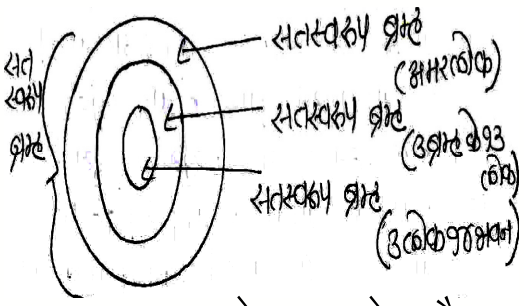

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि सतस्वरुप ब्रम्ह सदा अमर है उसकी मै क्या महीमा करुँ ?सतस्वरुप ब्रम्हके मायाके लोकमे ३ लोक १४ भवन,४ पुन्या है और पारब्रम्हके लोकमे तीन ब्रम्हके १३ लोक है । यह दोनो छोड दिये तो शेष बचे हुये सतस्वरुप ब्रम्हमे अमरलोक है ।

सतस्वरुप – (३ लोक १४ भवन + ३ ब्रम्ह के १३ लोक) = अमरलोक सतस्वरुप – होनकाल = अमरलोक

अमरलोक याने मृत्युलोक से विज्ञान ज्ञान प्राप्तकर पहुँचे हुये लोको की बस्ती । उस अमरपद मे ३ लोक के समान लोक रहते इसलिये उसे अमरलोक कहते ।

सतस्वरुप ब्रम्ह के पारब्रम्हपद मे सुख और दु:ख दोनो नही है तथा उसके माया के पद मे सुख और सुख के साथ महादु:ख है । यह दोनो माया और ब्रम्ह का पद छोड्के उसके शेष रहनेवाले पद मे सुख ही सुख है । वह शेष पद अमर माया का पद है । वह पद सतस्वरुप के ब्रम्ह पद से और सतस्वरुप के माया पद से अधिक विशेष है । वह सतस्वरुप ब्रम्ह मायाके समान ज्ञामगाता नही याने कम जादा नही होता ऐसे ही अमर माया नाश होनेवाले माया के समान कम जादा नही होती । वह अमर माया हंस को सदा सुख देनेवाली रहती । होनकाल मे माया त्यागनेसे हंस ब्रम्ह बनता पंरतु सुख के सिवा निकम्मा हो जाता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हंस को हद याने आकाश के निचे और बेहद याने पारब्रम्ह के परे मायासे ही सुख मिलते । माया छोडी तो हंस ब्रम्ह बनता । पारब्रम्ह पद का निवासी बनता और वहाँ पे बिना सुख का निकम्मा बनता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते कि हंस को जनम से लेकर मरने तक मायासे ही सुख मिलते और सतस्वरुप के गती पद मे याने मोक्ष पद मे पहुँचने पे भी माया से ही सुख मिलते । माया के सुख बिना हंस पारब्रम्ह मे बिना सुख का निकम्मा रहता । आदि से ही हंस भी सुख ही चाहता । वह बिना सुख का रह नही सकता । इसलिये आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर–नारीयो को कहते है कि,माया का तीन लोको का धाम त्यागो और अमर माया धाम प्राप्त करो । ये दोनो माया के धाम सतस्वरुप ब्रम्ह मे ही है परंतु अमर माया धाम यह तीन लोकके माया के धाम से अधिक विशेष है । इस अमर माया के धाम मे काल का दु:ख लेसभर भी नही है ।।।१५।।

दोहा ।।

ओ तो रस्तो बह रहयो ।। निमष ढील नही खाय ।।
समो आया सुखराम के ।। क्रोड़ाई हंस जाय ।।१।।

यह अमरलोक जानेका रास्ता बह रहा है । यह रास्ता निमिष मात्र भी रुकता नही । समय आने पे करोडो लाख हंस अमरलोक मे जाते ।।।१।।

सत बेराग अमीफल ईम्रत ।। पीवत ही गुण कीया ।।
युं निज नांव संत जन जाण्यो ।। जय चोथा पद लीया ।।२।।

सत बैराग अमृत फलके जैसा है । अमृत और अमर फल पिते ही गुण करता है उसी प्रकार सतवैराग्य बिना विलंब अमरलोक पाने का गुण करता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जो इस निजनाम को मोक्ष पाने का रत्न जानते वे सभी हंस माया के स्वर्ग,मृत्यु , पाताल ये तीन पद त्याग कर महासुख के चौथेपद याने सतस्वरुप पद मे जाते ।।।२।।

।। इति अमरलोक मेहेमा ग्रंथ संपूरण ।।